श्रम विभाग

ग्रादेश

दिनांक 25 जुलाई, 1986

स॰ ग्रो॰िव॰/इफ. डी./गुड़गाव/43-86/26433.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ कैंग फार्मज प्रा॰ लि॰, खाण्डसा, गुड़गांव के श्रमिक श्री हरि प्रसाद यादवं, पुत्र श्री दुरबल यादव माफ्त महाबीर त्यागी इंटक यूनियन, दिल्ली रोड़, गुड़गांव, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

मीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणयं हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़तें हुए ग्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गिठत श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अपवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री हिर प्रसाद यादव, पुत्र श्री दुरबल यादव, की सेवाओं का समापन न्यायोचित तया ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 28 जुलाई, 1986

सं श्रो वि /यमुना/10 9-86/26712 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वि श्रार कास्टिंग, इन्डस्ट्रीयल ऐरिया, यमुनानगर के श्रमिक श्री राम बाबू, पुत्र श्री साधु राम, मार्फत श्री राम भरोसे नजदीक मोहन लाल भटा, गांधी नगर, यमुनानगर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 हो धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, अम्बाला को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से स्संगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री राम बाबू की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो विव /यमुना/110-86/26718.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं धर्म मैटल रोलिंग मिल, जगाधरी, के श्रामक श्री शिव दत्त कुमार, पुत्र पंडित शालीग्राम, मार्फत डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मी, एन्टक श्राफिस ब्राहमण धर्मशाला, रेलवे रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रवन्वकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भीदोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है, या बिवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री शिवदत्त कुमार की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयंगैर हाजिर होकर नौकरी से पूर्नग्रहणाधिकार (लोयन) खोया है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकशर है ?

> म्रार० एस० मग्रवाल, उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।